॥ श्री गणेशाय नमः ॥

श्री हनुमान चालीसा

श्री गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा रचित

प्रारंभिक दोहा

श्रीगुरू चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनऊँ रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि॥

चौपाई 01
बुद्धिहीन तनु जांनिके, सुमिरौं पवनकुमार।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस विकार॥

चौपाई 02
जय हनुमान ज्ञान गुण सागर।
जय कुपीस तिहुँ लोक उजागर॥

चौपाई 03
रामदूत अतुलित बलधामा।
अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा॥

चौपाई 04
महाबीर बिक्रम बजरंगी।
कुमति निवार सुमति के संगी॥

चौपाई 05
कंचन बरन बिराज सुबेसा।
कानन कुंडल कुंद्रित केसा॥

चौपाई 06
हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजे।
कांधे मूँज जनेऊ साजे॥

चौपाई 07
शंकर सुवन केसरी नंदन।
तेज प्रताप महा जग वंदन॥

चौपाई 08
विद्यावान गुणी अति चातुर।
राम काज करिबे को आतुर॥

चौपाई 09
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया।
राम लखन सीता मन बसिया॥

चौपाई 10
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा।
विकट रूप धरि लंक जरावा॥

चौपाई 11
भीम रूप धरि असुर संहारे।
रामचंद्र के काज संवारे॥

चौपाई 12
लाय सजीवन लखन जियायो।
श्रीरघुबीर हरषि उर लायो॥

चौपाई 13
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई।
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई॥

चौपाई 14
सहस बदन तुम्हरो यश गावै।
अस कहि श्रीपति कंठु लगावै॥

चौपाई 15
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा।
नारद सारद सहित अहीसा॥

चौपाई 16
जम कुबेर दिगपाल जहां ते।
कवि कोविद कहि सके कहाँ ते॥

चौपाई 17
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा।
राम मिलाय राज पद दीन्हा॥

चौपाई 18
तुम्हरो मंत्र विभीषण माना।
लंकेश्वर भए सब जग जाना॥

चौपाई 19
जुग सहस्र जोजन पर भानु।
लील्यो ताहि मधुर फल जानु॥

चौपाई 20
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं।
जलधि लांघि गए अचरज नाहीं॥

दोहा (समापन)

पवनतनय संकट हरन, मंगल मुरति रूप।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप॥